ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-43-45**,YEAR-2015

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की प्रासंगिकता

❑ **डॉ0 अतुल कुमार यादव**

सारांश– *महिलाएं हमेशा से ही हमारी पारिवारिक व्यवस्था की धुरी रही हैं। प्रकृति ने भी उन्हें अधिक क्षमताएं प्रदान की हैं लेकिन बच्चों का पालन–पोषण करने, अपने अस्तित्व की रक्षा करने तथा आर्थिक परजीविता जैसे कुछ कार्यों ने उसे पुरूषों पर निर्भर बना दिया है। फलस्वरूप साधनों पर पुरूषों का अधिकार हो गया और महिला पिछड़ती चली गई। इसलिए अधिकतर निर्णय पुरूषों द्वारा ही लिए जाते हैं। व्यवहार के साथ–साथ आंकड़े भी पुरूषों की तुलना में महिलाओं को पीछे बताते हैं, इसलिए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक संतुलन को बनाए रखने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक हो गया है। महिलाओं में व्याप्त, रूढ़िवादिता, अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासीनता, तकनीकी अज्ञानता, स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता एवं सामाजिक कुरीतियों आदि की समस्याओं को दूर करना आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के द्वारा समाज में उन्हें प्रतिष्ठित करके उनके विकास के अवरूद्ध मार्गों को खोलना है। महिलाओं का सशक्तिकरण एक लगातार चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है, उसका प्रमुख उद्देश्य निर्बल नारियों के समूचे वर्ग को मुख्य धारा में लाना और सत्ता संरचना में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना है।*

'महिला सशक्तिकरण' का सामान्य अर्थ महिलाओं को शक्ति सम्पन्न बनाना है। परन्तु व्यापकता में इसका अर्थ बड़ा ही गूढ़ है। सशक्तिकरण का अभिप्राय सत्ता प्रतिष्ठानों में महिलाओं की भागीदारी से है। निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का एक प्रमुख मानक है। महिला सशक्तिकरण उन्हें नए क्षितिज दिखाने का प्रयास है जिसमें वे नई क्षमताओं को प्राप्त कर स्वयं को एक नवीन अन्दाज में देखेंगी, घरेलू शक्ति सम्बन्धों का उपयुक्त समायोजन करेंगी। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं का पुरूषों के बराबर वैधानिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्ता से है। महिलाओं को घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में सुरक्षित करना है जिससे उन्हें जागरूक कर शक्तिशाली बनाया जा सके। भारत में महिला सशक्तिकरण का मौलिक उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक दशा को सुधारना है।

'शिक्षा' व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। शिक्षा व्यक्तित्व एवं बुद्धि का विकास कर उसे सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कार्यों को सम्पन्न करने के योग्य बनाती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा महिला समाज में अपनी सशक्त भूमिका का एहसास करा सकती है। शिक्षित महिला न केवल स्वयं ही सशक्त होती हैं, बल्कि वह आने वाली पीढ़ी को भी सुशिक्षित व संस्कारित करके समाज में सशक्त भूमिका निर्वाह करने योग्य बनाती है। महिलाओं की वास्तविक स्थिति से व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। इस शोध प्रपत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा का क्या योगदान व भूमिका है यह मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद, (उ0प्र0) भारत

अध्ययन के उद्देश्य– इस प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का मूल्यांकन करना है जिसके पूरक उद्देश्य निम्नांकित हैं–

1. निदर्शितों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
2. निदर्शितों के व्यक्तित्व पर शिक्षा का प्रभाव जानना।
3. महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका ज्ञात करना।
4. महिला सशक्तिकरण हेतु व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

परीक्षार्थ परिकल्पनाएं–

शोध अध्येता द्वारा निम्नांकित परिकल्पनाएं परीक्षार्थ निर्मित की हैः

1. शिक्षा निदर्शितों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हुई है।
2. शिक्षा महिलाओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक है।
3. शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में आत्मनिर्भरता बढ़ी है।
4. शिक्षा से महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता सामाजिक चेतना आई है।
5. शिक्षित महिलाओं की महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि हुई है।
6. शिक्षित महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता आई है।
7. शिक्षित महिलाएं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के प्रति सजग हुई हैं।
8. शिक्षा ने महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता में वृद्धि की है।

शोध अध्येता द्वारा महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करने के लिए शिकोहाबाद नगर की कुल 50 उच्च शिक्षित सेवारत व असेवारत महिलाओं का चयन उद्देश्यपरक निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है ताकि तार्किक निष्कर्षों की स्थापनायें की जा सके। प्राथमिक आंकड़ों के संललन हेतु ''साक्षात्कार अनुसूची पद्धति'' का प्रयोग करते हुए प्रत्यक्ष अवलोकन प्रविधि को अपनाया गया है तथा वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है।

तथ्य संकलन एवं प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण

तालिका नं0 1

निदर्शिता की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

क्रम सं	चर	आवृत्ति (प्रतिशत में)			योग (प्रतिशत में)
1	आयु	18 से 30 वर्ष 11 (22.00)	30से 50 वर्ष 30 (60.00)	50 से ऊपर 9(18.00)	50 वर्ष (100.00)
2	जाति	सामान्य 11 (22.00)	अन्य पिछड़ा 30 (60.00)	अनुसूचित 9(18.00)	50 (100.00)
3	धर्म	हिन्दू 50 (100.00)	मुस्लिम 0 (00.00)	अन्य 0 (00.00)	50 (100.00)
4	परिवार का स्वरूप	एकल 39 (78.00)	संयुक्त 11(22.00)	अन्य 0 (00.00)	50 (100.00)
5	शैक्षिक स्थिति	स्नातक 03 (06.00)	परास्नातक 41(82.00)	पी–एच.डी. 06 (12.00)	50 (100.00)
6	व्यवसाय	नौकरी 36 (72.00)	व्यापार 03(06.00)	अन्य 11 (22.00)	50 (100.00)

उपर्युक्त तालिका नं0 1 निदर्शितों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करती है।

तालिका नं0 2

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका के प्रति निदर्शितों के अभिमत/दृष्टिकोण

क्रम सं	सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका	निदर्शितों के अभिमत (प्रतिशत में)				योग (प्रतिशत में)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
1	वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास	47 (94.00)	– (00.00)	03 (06.00)	– (00.00)	50 (100.00)
2	व्यक्तित्व विकास में सहायक	45 (90.00)	– (00.00)	05 (10.00)	– (00.00)	50 (100.00)
3	आत्मनिर्भरता में वृद्धि	42 (84.00)	03 (06.00)	05 (10.00)	– (00.00)	50 (100.00)
4	जागरूकता	44 (88.00)	03 (06.00)	03 (06.00)	– (00.00)	50 (100.00)
5	महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि	48 (96.00)	02 (04.00)	– (00.00)	– (00.00)	50 (100.00)
6	निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि	50 (100.00)	– (00.00)	– (00.00)	– (00.00)	50 (100.00)
7	स्वास्थ्य के प्रति सजग	47 (94.00)	– (00.00)	03 (06.00)	– (00.00)	50 (100.00)
8	राजनीतिक चेतना, जागरूकता व सहभागिता में वृद्धि	49 (98.00)	01 (02.00)	– (00.00)	– (00.00)	50 (100.00)
9	अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि 47(94) शेष उदासीन पायी गयी है।					

प्रसंगाधीन तालिका के प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 47 (94.00) निदर्शितों ने माना है कि महिलाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में शिक्षा की भूमिका है। 45 (90.00) निदर्शितों ने स्वीकार किया है कि शिक्षा महिलाओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक है 42 (84.00) ने माना है कि शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में जागरूकता आई है, 48 (96.00) ने माना है कि शिक्षा ने महिलाओं में महत्वाकांक्षा जनित की है। 50 (100.00) निदर्शितों ने स्वीकारा है कि शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता का विकास हुआ है। 47 (94.00) महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति सजगता आई है। 49 (98.00) निदर्शितों ने माना है कि शिक्षा के प्रसार–प्रचार की वजह से महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा महत्वपूर्ण कारक भूमिका का निर्वाह कर रही है।

परिकल्पनाओं के परीक्षण–

- परिकल्पना नं0 1 ''शिक्षा महिलाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक पाई गयी है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 2 ''शिक्षा महिलाओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 3 ''शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में आत्मनिर्भरता बढ़ी है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 4 ''शिक्षा से महिलाओं में सभी तरह की जागरूकता आई है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 5 ''शिक्षित महिलाओं की महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि हुई है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 6 ''शिक्षित महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि हुई है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 7 ''शिक्षित महिलाएं चिकित्सा व स्वास्थ्य के प्रति सजग हुई है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)
- परिकल्पना नं0 8 ''शिक्षा ने महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता व सहभागिता में वृद्धि की है जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है।'' सत्य एवं सार्थक है। (दृष्टव्य तालिका–02)

सुझाव– महिला सशक्तिकरण हेतु शिक्षा में वृद्धि तथा व्यापक प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है, इसके लिए निम्नलिखित सुझाव महत्वपूर्ण हो सकते हैं–

1. महिलाओं में शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु गांव–गांव में महिला समितियों का गठन करके उन्हें बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी दी जाए तो इससे महिला सशक्तिकरण को और गति मिल सकेगी।
2. प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं, शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न उपकरणों की समुचित व्यवस्था की जाए ताकि बालिकाओं में शिक्षा के प्रति रूझान पैदा हो सके।
3. बालिकाओं के प्रति उनके घर से निकट ही अच्छे विद्यालयों की स्थापना की जाए ताकि वे अपने निवास स्थान के पास ही शिक्षा ग्रहण कर सकें।
4. पिछड़े एवं कमजोर वर्गों में महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए स्वयं सेवी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।
5. महिलाओं में शैक्षणिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए लैंगिक असमानता को समाप्त कर विद्यालयों में योग्य शिक्षकों की नियुक्तियां करके शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री निवास एम.एन. (1988) "The Changing of Indian Women" Oxford University, Press, Delhi.
2. कुरूक्षेत्र (2008) ''ग्रामीण महिला सशक्तिकरण'' वर्ष 54, अंक 5, मार्च 2008

*****